शोध मंथन Vol. XVI No.I Jan.- Mar. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

ग्रामीण आर्थिक विकास में गौठान की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

15

प्राप्तिः 20.02.2025
स्वीकृतः 12.03.2025

डॉ0 शोभा अग्रवाल
शोध निर्देशिका
असिस्टेंट प्रो0 (वाणिज्य विभाग)
अग्रसेन महाविद्यालय रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

निशी ठाकुर
शोधार्थी (वाणिज्य विभाग)
अग्रसेन महाविद्यालय रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत
ईमेलः*thakurnishi835@gmail.com*

सारांश

देश की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवासरत है। ग्रामीण परंपरा को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से गाँव के लिए ''सुराजी गाँव योजना'' की शुरूआत की गई। सुराजी गाँव योजना अंतर्गत चार कार्यक्रम ''नरवा, गरूवा, घुरूवा, एवं बारी'' का संचालन किया गया। इन चारों कार्यक्रमों में से गरूवा कार्यक्रम अंतर्गत गौठान एवं गौठान पर आधारित अर्थव्यवस्था को समझना इस शोध पत्र का उद्देश्य है। प्रस्तुत शोध में सुराजी गाँव योजना एवं इसके चारों कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण दिखाया गया है। गौठानों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास को दिखाने का प्रयास किया गया है। गौठान के माध्यम से रोजगार की प्राप्ति, आय में वृद्धि, जैविक कृषि को बढ़ावा एवं उद्यमिता विकास से संबंधित प्रश्न साक्षात्कार के माध्यम से किए गए है। उक्त प्राथमिक समंकों के संकलन हेतु रायपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में गौठान से संबंधित 120 हितग्राहियों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक समंकों के साथ–साथ द्वितीयक समंकों का भी प्रयोग किया गया है। समंकों का विश्लेषण कर प्रस्तुत अध्ययन का निष्कर्ष बताता है कि गौठानों के माध्यम से ग्रामीण आर्थिक विकास हुआ है। यह ग्रामीण आर्थिक विकास के साथ–साथ पशु संरक्षण, पशुपालन, स्वरोजगार, जैविक कृषि एवं ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देता है।

मुख्य बिंदु

गौठान, गरूवा, आर्थिक विकास, ग्रामीण उद्यमिता

प्रस्तावना

गौठान शब्द दो शब्दों से बना है गौ+ठान, जहाँ गौ का अर्थ है गाय एवं ठान का अर्थ है ठहरना अर्थात् ऐसी जगह जो गायों के ठहरने के लिए हो। पशुपालन प्राचीन सभ्यताओं से ही हमारे देश के आर्थिक जीवन का आधार रहा है। कृषि कार्योंपरांत पशुपालन ही आजीविका एवं जीवन का आधार रहा है। भारत की अधिकतम् जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। ग्रामीण आजीविका में कृषि एवं पशुपालन ही महत्वपूर्ण घटक सिंधु घाटी सभ्यता से वर्तमान तक रहे है। पशुओं के पालन में सर्वाधिक

महत्व दिया जाता है गौ पालन को। ग्रामीण आजीविका के इन महत्वपूर्ण साधनों को बढ़ाने की आवश्यकता के उद्देश्य की पूर्ति हेतु छत्तीसगढ़ शासन ने 1 जनवरी 2019 को ''सुराजी गाँव योजना'' का शुभांरभ किया। सुराजी गाँव योजना के चार स्तंभ रहे ''नरवा, गरूवा, घुरूवा एवं बारी।'' इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था के परंपरागत संसाधनों को संरक्षित एवं पुनर्जीवित कर राज्य की अर्थव्यवस्था में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का योगदान बढ़ाना एवं ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक विकास के अवसरों में वृद्धि करना है।

सुराजी गाँव योजना के चार स्तंभ–

छत्तीसगढ़ के चार चिन्हारी,
नरवा–गरूवा–घुरूवा और बारी।

1. नरवाः– नरवा कार्यक्रम अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में जल संचयन एवं जल प्रबंधन को बढ़ाने के लिए पुराने नरवा को पुनर्जीवित करने एवं नवीन नरवा के निर्माण का उद्देश्य रखा गया। नरवा का अर्थ हैं साफ पानी का नाला। इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश में उपलब्ध विभिन्न जल स्त्रोतों के अलावा नरवा में पानी का संरक्षण कर कृषि के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध कराया गया।

2. गरूवाः– गरूवा का अर्थ होता है पशु, परंतु गरूवा कार्यक्रम अंतर्गत राज्य के विभिन्न पशुओं में से गौवंशीय पशुओं को लिया गया। छत्तीसगढ़ राज्य में पशुगणना 2019 के अनुसार कुल गौवंशीय पशुओं की संख्या 36.75 लाख है। गौवंशीय पशुओं की रक्षा एवं संरक्षण के लिए शासन द्वारा ग्राम सुराजी योजना अंतर्गत दूसरा कार्यक्रम गरूवा कार्यक्रम चलाया गया है।

3. घुरूवाः– घुरूवा कार्यक्रम सुराजी गाँव योजना के अंतर्गत संचालित तीसरा कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कृषि एवं पशु अपशिष्टों से जैविक खाद का निर्माण कर जैविक कृषि को बढ़ावा देने की परिकल्पना के आधार पर कार्य किया गया।

4. बारीः– सुराजी गाँव योजना का चौथा कार्यक्रम है बारी कार्यक्रम। इस कार्यक्रम के अंतर्गत घरेलू बाड़ियों में सब्जी आदि के उत्पादन को बढ़ावा देकर पोषक आहारों को उपलब्ध कराना एवं ग्रामीणों की अतिरिक्त आय को बढ़ाने की कल्पना की गई।

संबंधित साहित्य का अवलोकन–

1. गुप्ता, अरूणेश कुमार (2021), ने अपने शोध पत्र ''छत्तीसगढ़ राज्य की नरवा–गरूवा–घुरूवा–बारी योजना'' में सुराजी गाँव योजना के इस चारों कार्यक्रमों का अध्ययन कर उनकी उपयोगिता एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्व को बताया है साथ ही उन्होंने बताया कि योजना का सफलतापूर्वक क्रियान्वयन छत्तीसगढ़ प्रदेश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि का साधन होगा।

2. कुमार, एस.; एवं सारस्वत, सपना शर्मा (2021), ने अपने शोध कार्य ''पारंपरिक कृषि पद्धति पर सुराजी गाँव योजना का प्रभाव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' में नरवा–गरूवा–घुरूवा–बारी योजना के महत्व को बताते हुए कहा कि ग्रामीण समाज में उपलब्ध पांरपरिक एवं प्राकृतिक संसाधनों को इस योजना के माध्यम से संरक्षण प्राप्त हुआ है।

3. कुमार, एस.; एवं सारस्वत, सपना शर्मा (2021), द्वारा अपने शोध पत्र ग्रामीण समाज में सुराजी गाँव (नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी) योजना के प्रभाव का अध्ययन (छत्तीसगढ़ के

राजनांदगांव जिले के संदर्भ में)'' (2021) में योजना के महत्व को बताया उनके अनुसार योजनांतर्गत ग्रामीण संस्कृति का पुनर्जीवन हो रहा है। जैविक कृषि को बढ़ावा, ग्रामीण स्वरोजगारों में वृद्धि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास आदि लाभ ग्रामीण क्षेत्रों में देखने को प्राप्त हो रहे है।

4. कुमार, रमेश (2021) ने अपने शोध पत्र "Appropriating Animal Resources Godhan Nyay Yojana of Chhattisgarh" में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गोधन न्याय योजना के महत्व को बताया है। गोधन न्याय योजना से ग्रामीणों को रोजगार एवं आय की प्राप्ति को समझाया है।

5. कुमार, एस.; एवं सारस्वत, सपना शर्मा (2021), ने अपने शोध पत्र ''ग्रामीण समाज में नरवा, गरूवा, घुरूवा और बारी की उपयोगिता (छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगांव जिले के संदर्भ में)'', (2021) में नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी को पृथक–पृथक महत्व दर्शाया है।

6. बेज, दीपक; कर्मकार, एस.; वर्मा, छगन. एस. (2022) द्वारा अपने शोध पत्र कार्य "Narwa, Garwa, Ghuruwa and Bari (NGGB) Program Development of Mardopatti Gram Panchayat Kanker District A Remote Sensing & GIS" 2022'', में बताया कि नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी योजना ग्रामीण सामाजिक एवं आर्थिक विकास तथा आजीविका का सृजन करता है। यह योजना ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

7. पाण्डेय, स्नेहा; पटेल, ममता; बी. सुमीत एवं पारते, जवाला ने अपने शोध पत्र "Resource use efficiency Vermi Compost Production under Gothan and Godhan Nyar Yojana in Chhattisgarh India" (2023), में गोधन न्याय योजना अंतर्गत वर्मी कम्पोस्ट बनाने में संसाधन उपयोग दक्षता को बताया है। गोबर की मात्रा का वर्मी कम्पोस्ट के उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव को बताया है।

8. साहू, तोमेश्वरी ने अपने शोध पत्र ''छत्तीसगढ़ की सुराजी गाँव योजना के अंतर्गत गरूवा योजना की भूमि का अध्ययन'' (2025), में सुराजी गाँव योजना के गरूवा कार्यक्रम की सार्थकता को बताया है। उन्होंने गरूवा कार्यक्रम के क्रियान्वयन, चुनौतियाँ एवं सुझाव बताए है। उनके अनुसार यह योजना ग्रामीण विकास की एक महत्वाकांक्षी योजना है परंतु वर्तमान में अपर्याप्त आधारभूत संरचना के कारण योजना के अपेक्षित परिणाम नहीं मिल रहे है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य–

1. ग्रामीण क्षेत्रों में गौठान के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के कार्यों का अध्ययन एवं मूल्यांकन करना।
2. गौठान के माध्यम से ग्रामीणों के रोजगार सृजन हेतु किए गए प्रयासों का अध्ययन एवं मूल्यांकन करना।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन के विकास में गौठान के माध्यम से किए गए कार्यों का अध्ययन एवं मूल्यांकन करना।

शोध अध्ययन की प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों समंकों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक समंक हेतु रायपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों से 120 उत्तरदाताओं से साक्षात्कार के माध्यम से प्रश्न कर समंकों का संकलन किया गया है तथा द्वितीयक समंकों के संकलन हेतु योजना के क्रियान्वयन में संलग्न विभागों के प्रतिवेदनों, इंटरनेट, पुस्तकों एवं रिसर्च जर्नल का प्रयोग किया गया है।

शोध अभिकल्प–

समग्र – रायपुर जिले के ग्रामीण हितग्राही।

प्रतिदर्शन विधि – यादृच्छिक।

प्रतिदर्श का आकार – 120।

सर्वेक्षण क्षेत्र – रायपुर जिले के ग्रामीण।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

H_1 गौठानों के माध्यम से ग्रामीण आर्थिक विकास हुआ है।

H_2 गौठानों के माध्यम से पशुपालन एवं पशु संरक्षण को बढ़ावा मिला है।

Ho_1 गौठानों के माध्यम से ग्रामीण आर्थिक विकास नहीं हुआ है।

शोध अध्ययन की सीमाएँ–

1. सुराजी गाँव योजना के चार कार्यक्रम नरवा, गरूवा, घुरूवा एवं बारी में से केवल गरूवा कार्यक्रम का चयन किया गया है।
2. गौठान संपूर्ण छत्तीसगढ़ में है परंतु अध्ययन के लिए केवल रायपुर जिले का चयन किया गया है।
3. रायपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में गौठान के समस्त हितग्राहियों में से 120 हितग्राहियों से ही आँकड़ों का संकलन किया गया है।

गौठान एवं गौठानों की भूमिका

गौठान गाँव की गाँव के लिए बनाई गई संरचना है। गौठान वह स्थान है जहाँ पशुओं को चराने के उपरांत कुछ समय दोपहर में ठहरने के लिए, विश्राम के लिए रखा जाता है। वर्तमान में यह प्रथा विलुप्त सी हो गई थी। गरूवा कार्यक्रम अंतर्गत गौठान प्रथा को पुनर्जीवित किया गया। गौठानों में गौवंषीय पशुओं के लिए विश्राम स्थल, पानी की व्यवस्था, चारे की व्यवस्था शेड की व्यवस्था उपलब्ध करवा कर पशुओं के संरक्षण को बढ़ाया गया।

गौठान के संचालन हेतु कार्यकारिणी समिति का निर्माण किया गया जिसमें 8 से 13 सदस्य हो सकते है। गौठान संचालन में ग्राम पंचायत, कृषि विभाग, पशु विभाग, वन विभाग, एवं पंचायत तथा ग्रामीण विकास विभाग का योगदान रहा।

ग्रामीण आर्थिक विकास में गौठानों की भूमिका

1. **पशुपालन एवं पशु संरक्षण को बढ़ावाः–** गौठान के माध्यम से गौवंशीय पशुओं को संरक्षण मिला। चराई के लिए लाए गई गायों को संरक्षण मिलने के साथ–साथ घुमंतु पशुओं को भी गौठानों के माध्यम से संरक्षण प्राप्त हुआ। वर्ष 2019 से 2023 तक रायपुर जिले में कुल 10803 पशुओं को सड़कों से गौठानों में विस्थापित कर उन्हें संरक्षित किया गया। तथा इसी अवधि में रायपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में कुल 317 गौठानों का निर्माण कर पशुपालन को बढ़ाने का प्रयास किया गया।

2. **जैविक कृषि को बढ़ावाः–** गौठान निर्माण में सफलता के उपरांत शासन ने 20 जुलाई 2020 से ''गोधन न्याय योजना'' का प्रारंभ किया। इस योजना के तहत गौठानों के माध्यम से पशुपालकों से 2 रूपए प्रति किलो की दर में गोबर क्रय कर स्व सहायता समूह द्वारा वर्मी कम्पोस्ट

में बदलकर 10 रू. प्रति किलों की दर से बेचा गया जिससे स्व सहायता समूह को रोजगार की प्राप्ति हुई है साथ ही वर्मी कम्पोस्ट के प्रयोग से जैविक कृषि को भी बढ़ावा मिला। वर्ष 2019 से 2023 की अवधि में रायपुर जिले के 299 गौठानों द्वारा कुल 7,54,528 क्विंटल गोबर क्रय कर, 237,475 क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन कर, 2,12,542 क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट का विक्रय किया गया जिससे 21,25,420 रूपए की आय अर्जित की गई।

गोबर क्रय के उपरांत गोमूत्र क्रय का प्रारंभ किया गया। 4 रूपए प्रति लीटर की दर से गोमूत्र क्रय कर स्व सहायता समूहों द्वारा प्राकृतिक तरल उर्वरक एवं कीट नियंत्रक का उत्पादन किया गया। वर्ष 2022–23 में रायपुर जिले के 6 गौठानों द्वारा 6,825 लीटर गौमूत्र क्रय करके 2,930 लीटर कीट नियंत्रक का उत्पादन स्व सहायता समूहों द्वारा किया गया। इस कीट नियंत्रक के विक्रय से कुल 1,45,930 रूपए की आय अर्जित की गई।

3. **ग्रामीण उद्यमिता का विकासः–** गौठानों के माध्यम से वर्मी कम्पोस्ट एवं प्राकृतिक कीटनाशक का निर्माण भी ग्रामीण उद्यमिता का उदाहरण है। इसके साथ ही गौठानों के माध्यम से क्रय किए गए गोबर का प्रयोग प्राकृतिक पेंट एवं डिस्टेंपर बनाने में किया गया। वर्ष 2023 से 2024 में रायपुर जिले में कुल 48242 लीटर पेंट का उत्पादन कर 32116 लीटर पेंट का विक्रय किया गया। इस विक्रय से कुल 6444984 रू. की आय अर्जित की गई।

उद्यमिता विकास के इसी क्रम में 2 अक्टूबर 2022 में ''महात्मा गाँधी ग्रामीण औद्योगिक पार्क (रीपा)'' प्रारंभ किया गया। गौठानों के अंदर ही रीपा योजना चलाई गई। रीपा के तहत् ग्रामीणों द्वारा विभिन्न कार्य जैसे– सिलाई, धातुकला, माटी कला, अगरबत्ती, साबुन, पापड़, बड़ी, मसाला, गोबर से पेंट, गोमूत्र से प्राकृतिक कीट नियंत्रक एवं अन्य रेडी टू इट प्रोडक्ट आदि का निर्माण कर उन्हें सी–मार्ट के माध्यम से विक्रय कर आय का अर्जन किया जाता है।

4. रोजगार की प्राप्तिः– गौठान के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई। गौठानों से गोबर क्रय, गोमूत्र क्रय कर, स्व– सहायता समूहों द्वारा कम्पोस्ट, पेंट, एवं अन्य उत्पाद तैयार किए गए। जिससे उन्हें रोजगार की प्राप्ति हुई।

5. **आय में वृद्धि :–** गौठान के माध्यम से गौ पालकों को गोबर, गोमूत्र के विक्रय से अतिरिक्त आय प्राप्त हुई। ग्रामीणों एवं स्वसहायता समूहों को स्व रोजगार के माध्यम से आय प्राप्त हुई।

आँकड़ों का विश्लेषण–शोध अध्ययन हेतु उत्तरदाताओं से पूछे गए प्रश्नों का विश्लेषण तालिका एवं चित्र द्वारा अग्रलिखित है।

तालिका क्रमांक 1: गौठान में पशुओं की सुरक्षा एवं संरक्षण की स्थिति

क्रमांक	पशु संरक्षण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	कम प्रभावी	24	20%
2.	तटस्थ	19	15.833%
3.	प्रभावी	43	35.833%
4.	अधिक प्रभावी	34	28.33%
	योग	**120**	**100%**

*(**स्त्रोतः** प्राथमिक समंक)*

तालिका 1 के अनुसार कुल 120 उत्तरदाताओं से गौठान के माध्यम से पशु संरक्षण का प्रश्न किया गया जिसके उत्तर में कुल 24 उत्तरदाता कम प्रभावी, 19 उत्तरदाता तटस्थ, 43 उत्तरदाता प्रभावी एवं 34 उत्तरदाता अधिक प्रभावी रहे।

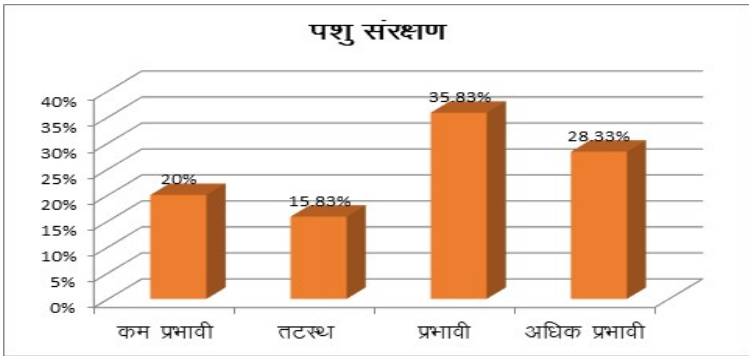

तालिका क्रमांक 2: गौठान से प्राप्त होने वाले लाभों की स्थिति

क्रमांक	प्राप्त लाभ	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	आय में वृद्धि	28	23.33%
2.	रोजगार की प्राप्ति	20	16.67%
3.	जैविक कृषि को बढ़ावा	33	27.5%
4.	महिला सशक्तिकरण	24	20%
5.	अन्य	15	12.5%
6.	कोई लाभ नहीं	0	0%
	योग	**120**	**100%**

*(**स्त्रोत**: प्राथमिक समंक)*

तालिका 2 के माध्यम से गौठान से होने वाले लाभों को दर्शाया गया है। कुल 120 उत्तरदाताओं में से 28 उत्तरदाताओं ने कहा गौठान से उन्हें आय में वृद्धि हुई। 20 उत्तरदाताओं ने कहा रोजगार की प्राप्ति हुई। 33 उत्तरदाताओं के अनुसार उन्हें गौठानों के माध्यम से जैविक कृषि का लाभ प्राप्त हुआ। 15 उत्तरदाताओं को अन्य लाभ की प्राप्ति हुई जबकि शून्य उत्तरदाता जिन्हें गौठान से कोई लाभ प्राप्त नहीं हुआ।

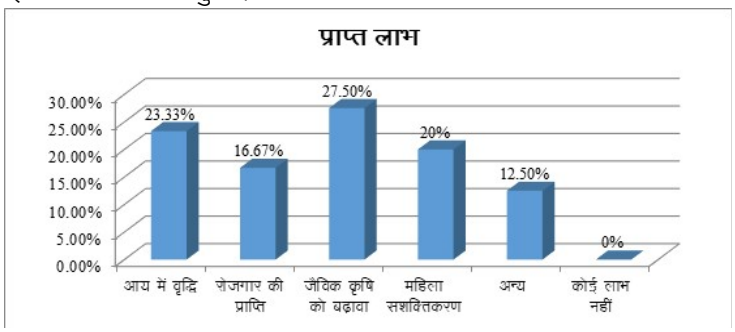

तालिका क्रमांक 3: गौठान के माध्यम से उद्यामिता के विकास की स्थिति

क्रमांक	उद्यमिता विकास	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	उद्यमिता विकास हुआ है	80	66.67%
2.	तटस्थ	25	20.833%
3.	उद्यमिता विकास नहीं हुआ है	15	12.5%
	योग	**120**	**100%**

*(**स्त्रोत**: प्राथमिक समंक)*

तालिका क्रमांक 3 के अनुसार कुल 120 उत्तरदाताओं से गौठान के माध्यम से उद्यमिता विकास पर प्रश्न करने पर 80 उत्तरदाताओं के अनुसार उद्यमिता का विकास हुआ है, जबकि 25 उत्तरदाताओं ने कहा उद्यमिता विकास नहीं हुआ है, वहीं 15 उत्तरदाता इस प्रश्न के लिए तटस्थ रहें।

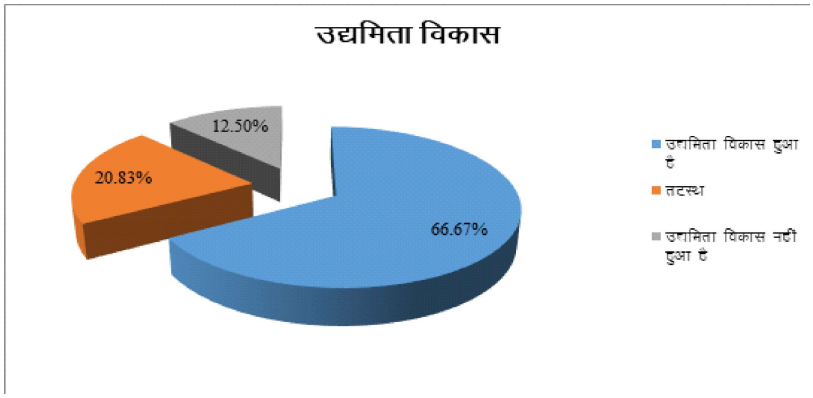

परिकल्पना विश्लेषण– उपरोक्त अध्ययन परिकल्पना 1 एवं 2 को संतुष्ट करती है एवं परिकल्पना 3 को गलत सिद्ध करता है।

निष्कर्ष

ग्रामीण संस्कृति, नीतियो, आजीविका एवम् सामाजिक महत्व जो समयांतराल में विलुप्त हो चुके थे उनके पुनर्जीवन के लिए गाँव में सुराजी गाँव योजना अंतर्गत नरवा, गरूवा, घुरूवा एवं बारी कार्यक्रम अत्यंत ही महत्वाकांक्षी योजना के रूप में लाई गई। उपर्युक्त अध्ययन यह बताता है कि गरूवा कार्यक्रम अंतर्गत गौठान चहुमुखी विकास का मार्ग रहा। गौठानों के माध्यम से पशुओं को संरक्षण प्राप्त हुआ, ग्रामीणों को रोजगार की प्राप्ति हुई, जैविक कृषि को बढ़ावा मिला, ग्रामीणों की आय में वृद्धि हुई तथा गाँवों में औद्योगिक पार्क के माध्यम से उद्यमिता का विकास हुआ। गौठान ग्रामीणों के व्यवहार में गरूवा कार्यक्रम प्रारंभ होने के पहले भी था एवं बाद में भी रहेगा। अपर्याप्त आधारभूत संरचना एवं राजनैतिक परिवर्तनों के कारण छत्तीसगढ़ राज्य में गौठानों के अपेक्षिक परिणाम वर्तमान में प्राप्त नहीं हो रहे है जिससे वर्तमान में गौठानों का संचालन लगभग बंद है।

सुझावः– ग्रामीण आर्थिक विकास हेतु न केवल गरूवा कार्यक्रम अपितु सुराजी गाँव योजना के चारों स्तंभ नरवा, गरूवा, घुरूवा एवं बारी कार्यक्रम को पुनः प्रारंभ करने से पूर्व ग्रामीणों की सहभागिता

प्राप्त कर उनसे योजना के सफल संचालन हेतु सुझाव प्राप्त करना चाहिए। ग्रामीणों से प्राप्त सुझावों के आधार पर योजना को पुनः प्रारंभ करना ग्रामीण क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण साधन सिद्ध होगा। गौठान परंपरा का पुनर्जीवन ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास को गति प्रदान करेगा।

संदर्भ

1. बेज, दीपक; कर्मकार, एस.; एवं वर्मा, एस. छगन, "Narwa, Garwa, Ghurwa and Bari (NGGB) Program development of mardapatti Gram Panchayat Kanker District : A Remote sensing - GIS Approach" Internation jaounal of science and Research april 2022 volume 11, Issue – 4, Pg. **589-593**
2. गुप्ता, अरूणेश कुमार ''छत्तीसगढ़ राज्य की नरवा, गरूवा, घुरूवा और बारी योजना'' शोध समागम, अदिति प्रकाशन, अप्रैल 2021, वॉल्यूम 04, पृ० सं०–1604–1607
3. Kothari, C.R.; and Garg, Gaurav "Research Methodology methods and techniques" New age international pvt. ltd. 2018 Pg. **1-27**
4. मुखर्जी, रविन्द्रनाथ ''सामाजिक शोध व सांख्यिकीय'' विवके प्रकाशन 2009 पृ० सं०–1–12
5. पाण्डेय, स्नेहा; पटेल, ममता; बी. सुमीत; एवं पराते ज्वाला, ''Research use efficiency of vermicampost production under gothan and godhan nyay yojana in Chhattisgarh, India". Asian journal of Agricultural extension economics & sociology, 2023 Pg. **553-557**
6. एस. कुमार; एवं सारस्वत, सपना शर्मा ''ग्रामीण समाज में सुराजी गाँव (नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी) योजना के प्रभाव का अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगांव जिले के संदर्भ में)'' 2021, शोध सरिता, UGC Care listed, पृ० सं०–88–91.
7. एस. कुमार; एवं सारस्वत, सपना शर्मा, ''ग्रामीण समाज में नरवा, गरूवा, घुरूवा, और बारी की उपयोगिता एवं महत्व का अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगांव जिले के संदर्भ में) 2021, शोध मंथन पृ० सं०–244–249
8. एस. कुमार; एवं सारस्वत, सपना शर्मा ''पारंपरिक कृषि पद्धति पर सुराजी गाँव योजना का प्रभाव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के राजनांदगांव जिले के संदर्भ में'' 2021 समसामयिक सृजन, UGC Care Listed S.N. 61 पृ० सं०–387–391
9. साहू, तोमेश्वरी ''छत्तीसगढ़ की सुराजी गाँव योजना के अंतर्गत गरूवा येाजना की भूमिका का अध्ययन'' 2025, अमोघवार्ता, अदिति प्रकाशन, वर्ष–04, वॉल्यूम–04, पृ० सं०–139–144
10. शुक्ला, एस.एम.; एवं गुप्ता, एस.पी. ''व्यावसायिक सांख्यिकी'' साहित्य भवन प्रकाशन, 2022 पृ० सं०–43–56
11. संबल शासन की कल्याणकारी योजनाएँ, जनसंपर्क विभाग (छ.ग.), 2021 पृ० सं०–6–7 एवं 58–65
12. छत्तीसगढ़ राज्य आर्थिक सर्वेक्षण प्रतिवेदन, 2019 से 2024

13. गोधन न्याय योजना समीक्षा प्रतिवेदन
14. नरवा, गरूवा, घुरूवा, बारी योजना दिशा निर्देशिका।
15. www.cglive.in (18/10/2024)
16. www.nggb.cg.in (24/10/2024)
17. www.vad.cg.gov.in (03/11/2024)
18. www.prd.cggov.in (05/11/2024)
19. www.drishtiias.com (07/11/2024)
20. www.cg.gov.in (10/11/2024)